





















की देशों के कुछ में गीना बाता है। क्षीन जानत है कि (27) हनका प्राचन्त्रम क्षीत्र गण्य की टिस्ट म ध्यवसक है विर ही करोटों क्याय की तरकरी राज होती है। r रामात्र में भी ऐसे मानव इस्त है जो बानून की हरिए ह माच होते हुए भी सामाजिक परम्पराधी क विशेषा है राज्य कीर बानुन म व्यक्ति सम्बं समय नव नही वस सबता है, यन गहेग्रहाय की ऐस कार्त नहीं करन षाहिए। घरने दश घटर याषामा व निरः दाति को का घटस्य मिलती है। समाज विकट कार्य करन प्र माजिब प्रतिष्टा गिरतो है भीर गामाजिब बहिरहार दिया बाता है। इसस ज्ञानीसब ट्यांक २५८ ही अ को ीर ध्वति का जीवन हुक्त्यव हा जाता है , हो बाय राज्य कीर कारक ही क्षेत्र क संत हा गंव द ही पर जुपम की हरित स निय हों हो रवता सात बरना बाहित हिंदा हुई। ब ती सदर्शित कास, सरकार साह स्वाद हरि

रे। यमें दिस्य बाच बरश र ब्यांत अ हा



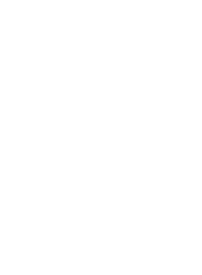








यिन मानव को पुरारे घोर मान्त वन-१ ५ ११ (६ र े कादी होकर पन की मूरा कम करनी ांगा। गमा नह षीयन में धारमचिनन एवं धाध्यारियक निक्स के निने इति कर वायेगा । धंवों न लाक कर्याण क । उ. एए। त्या है बि-राई इतना दीजिये जाम बुदुस्व गमाय । में भी पूरता न वहू गापुन युवा जाय ।। परिवार वे व्यक्तियों को भी ऐना ही तय र Frained , किसा जाम कि में भी ब्यूच का ब्यूसन पान एक सुरा निष्ता में न जनके। बष्ट सहबर भी पण ब एट बा घोर मानवित न हो। बमाई व सनसार ही सहना कान गत रहन-ग्रहम रहाँ। बाह्म दिराव वा व बना स म हो छछे जीदम में धर्म की समस्या मही रहती । जोदन वेष एवं विहा होडी प्रशास गाना है। दल्ल क साविक ष्टा बढ़ती है घीर स्थान ६ म वा बार प्रदूष होता है। हमें करिय कि सिन्ह्याही इन केंद्र इंग्ट को को जबर सन्दे गुरा को प्रत्न कर ।



1311 यदि सानव को मुगी धीरणान्त वन र १ तो हर क्यों होवर यस की घूस कम करन गांगा गो। तह श्रीयन में पारमजितन एवं घाट्यासिक विक्रंस के विशे **डेंद्र कर वायेगा । संतों** ने मोक करनारण क । उँ घ*र* छ राई हतना दीजिये नाम नुदुम्ब मागय । मैं भी भूता न रह मापुन युगा नाय।। परिवार के क्योंकियों की भी ऐसा ही तय ह Trained राज्ञाय कि में भी ब्याय का ब्यासन ए "न एवं तुरा गामेन उसके। बाट सहबर भी पाए व परा वा मार्वावत न हो। बमाई व यनसार ही याना कान हेंन-घटन रखें। बाह्य दिलाव का न कना स्व स हो मीदन में घर्ष की रामस्या नहीं रहेनी । जीवन देव बिहा सदा प्रत्य गरूना है। इत्तर राज्य विक बढ़ती है और ब्यांस ध्या की बार प्रदूर होगा है। कार्दि कि विकासको दन दोर ६० दो का र हत्त्रे दुस को प्रत्न कर ।

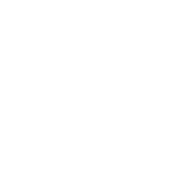


























(49) जोबन की परिस्थितियाँ परिवयनार है। इस प्रधान मिति सद्भाव घीर सवा क भावन । किया को क ; वेषन नहीं वह धोर न हो किसी वे प्र'व गुना पीर रिक म्बार की नोबना रगर। जो उनीन नी। चित सवा अस्ति करना ६ २००० च्या ५ । १८ रहा एम है। प्रविश्वासी बनमा है। जाबन राण भारत के। के धार एक दिन सभी को इस सम र स र गा 🏃 fean is mortal मानव सरण्यील है। यन उन्व वस्ती सन्त । उप मया सरबंग ही साथ जन है। बहा है मीटा बोलो नम चना सद हवा उने

बितन दिनो का जार 'क्या अवश्तृ । वास्तो से सपुरता त्य द्यावर हम अह मा श्रान्त हो क्य का सार है। यह शब्दा मा द्या सा अव वा श् देश का सार स्थापन का कहा नहा सा अव वा श् देश क्षेत्र स्थापन का कहा नहा स्थापन का का देशों एक कररत सामा का स्थापन का हर स्थापन सा।



























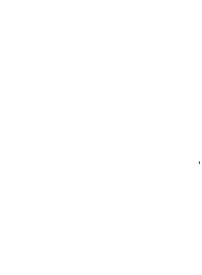




कृतज्ञना

उपनारों में तपकार का मानना जननना के थो। उसे हिर बाना तपकार का बदला सपकार से धुनाना है। इन-हिरा बाना के क्षेत्र के स्वाधित के बिसी भी नरह की मन्द दने वाला क्यक्ति उपकारी कहनाना है। उसके हिरा की गई मन्द्र को हमला साद स्वतना उसके स्वक्तर की मानना कृतन्ता का गुण है। जीवन संवर्ष प्राप्त कि सावस्य के हैं।

हैंग सपन हारा विसी पर विधे एपवारों वा त नतन् दार रसते हैं विन्तु दूसरों के हारा धारी उपन विध गये देखारों को जून खाते हैं। परिस्तास यह होते हैं वि रसस एर भाव बढ़ जाना है बिन्नु बिन्सना नत्र ना जाना के देखारियों के प्रति खो धादर भाव सन्तु उन्ना वर्ग ग वेरे मही रहेंगा, समय धाने पर एनकी सेव न्यूना धार्य है हारा एनके उपकारों का यह बिन्नु अस्मायनन जो नही कर पाना । प्रसार को मानने बाना ही उपकार का बन्मा कर पर सहा । प्रसार को मानने बाना ही उपकार का बन्मा



लोकिषयता

मीरियया व्यक्ति के व्यवहार की मसीटी है। दूसरी है माथ उत्तरा व्यवहार कैंग है? इसका ज्ञान उठकी मारिव्यता में हो जाता है।

मोरिश्रय बनना मासान बात नहीं है। इसने विये विवेद विवेद विवेद कर्माटि के जीवन-निर्माण की सावव्यक्ता है। जीवन के मुग्न गरगुण अने-वरोहकार सदाबार, विगय-कप्रता, क्युग्ता, सरकता मादि का होना मित मावत्यक है। जिनका कोवन एन सद्गुणों से महकता हो सह वीन गरी बाहना है।

परावदार का क्षय है सन्ते ज्ञासमध्य वो स्नामनुत्य रममकर परवीका को निक्रपोका वर्ष वरहित को निक्रहित समसना । तथा तथा सबसकर निज्ञार्थका से दुगरों के दुगरदे में सह्यापी सनता क करूरत कर्यों की सदद करता । दिश स्मत्ति में यह दुल का कारण है कर करत रूपी को दिस सदता है। क्षय या शता श करूबा स्वेवाहर कर्याक्ष-क्रियत मान क्षी हो सब दी दिस्तु हका जो क्षय पर इक्ष



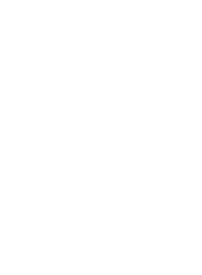
· । इसमें घादर के बजाय सोगो से तिरस्वार एव (क्षात्रास ही प्राप्त होगा। वैसे कटुवादी से लोग दूर ही रिनाप्तः वरते हैं। कीमा किसी का क्या लेता हैं भीर

ित्त किसी की बया देती हैं ? कि जुकोयल सबको मच्छी माने है पीर कोए को समा देने का मन होता है। यह ^{द्भार क}ड़ गर्दों का ही सातर है। सत हमेशा सधुर ^{दिन्}यपुन एव ठच ग[ः]ण बोलना चाहिये ताबि मुनने लों का मन सनुष्ट धौर प्रसप्त वहे। षायवासान में ध्यक्ति की ती निदा होती ही ह नीव नाम उसके जाति, कुत यस की भी वह निर्ाकर-रोताः । लागों का सथसंकी सीर प्रश्निकरता है। मार्वादय बनना नशी चाहन है बाप भी चाहन । ना दिर्मिये कि इन शर्ममारे की जीवन में साना धावापक । मधी मच्यो मोवडियमा कवित होगी। साथ सपनी

विविध्या वे साम्यस्था वर्षे लागो का जीवन करा सकत । ए हे बार को काह यह खब्द श्वाद है। सम्पत्र प्रसाद उपयोग साध्य व नार विव जामारा की निय बस







कार्त की सरस है। कुछ, कार्य सुर नगा ३ गिर सा न में शरमाने हैं किसी के घर लान जासगता न गा इटकर द्वायण। राज्य को गाम्य किसी राज्य जिल्ला वेराना परस्य का वा विजय सराज्य करण करण करण पाप सिपाना धस कास करना रूप भे गा के भे भ

स्वत्राह्मात्र । १ वज्र व ... त । व ... त स्वत्र स्वत्राह्मात्र स्वत्र ह दिव व ... त ...

याप हा कुत बहुत्या पहुँ हुए सान बाजस्था ता है दूर रहेंगा है सामी वर्षाल क्षेत्र क्षा याचा जहर करना कल प्यान में यांत्री बहुत यह जरूर सामक हुआ है सहर वर्षात्र साथ्या सरमा है क



बरा बरा सौ शत में कुछ एव नाहाज होते थाला भिंत स्वम मो परेशान रहता है तथा दूसरों के लिये भी पानि का कारण बनता है। इसे कोई चाहता नहीं। उन्ह स्वमाव के बिट चिट्टेयन वे कारण बूबरे व्यक्ति उन्ह स्वमाव के बिट चिट्टेयन वे कारण बूबरे व्यक्ति

उन्हें स्वभाव के विद्ध विद्ध वन के कारण हुंबर स्थाल इंडर पात मान, यठने मीर बीलने से भी हिचकियाते हैं। गांत स्थितः दूसनो के श्रवनुष्ट्री स्वयन्थी के प्रति इंडर- प्यान माकपित करना, जिससे सुनने वाले की रीप वहीं किन्नु स्वयन) भूत का ग्रहमास होगा सफ्जा का सन्-भव होगा। एमने क्वांश्व की मगुरना दूपने का बोध देगी। उसने बजाय दूपनो के स्वयुक्ती तब स्वयश्यों के विद्ये पुत्ये में साहर कहने या गुचारने की चेटन करने में गांभने साले स्वर्णन की कलती मनगून हान व बजाय नीच सायेगा एव वहर भगड़ा कर बरना।

नदा शांत प्रकृति बाला स्पनित तथय और व्यासानी से गुफ्र शक्ता है । स्था बहुने की हिंद्रणान काई भी कर शक्ता है । साथी से काई साला भी पाला नहीं करता ।

शीरयण बारदर में बार यह बाली है। अबदेंगी लाई



नीव कुषानुकरमञ्जालुन्य दिहन वा न बार अर्थात कीय
राज होकर सबसे पहले अपने आस्था स्थान को जला
रेगहैं। से सबसे पहले अपने आस्था स्थान को जला
रेगहैं। से सबसे मन में पुमना है तो व्यक्ति के सहवार को
देर प्रांता है। यायल अहरार हो लोख के स्थ में
पीरवित होना है। त्रीथ एक आयेल है जो विभिन्न न्यो
म एए होता है। त्रीथ एक आयेल है जो विभिन्न न्यो
म एए होता है। त्रीथ का सरीर होर सन दानो पर
मिन्दर अमाव पटता है। त्रीथ साथना वा नजु है।

मुहरान जैन महान व्यक्तियों हे कोय पर निवेष रैंडे घोर धरकाता से विजय वायी थी। कोग पर निजय घोने हे निय प्राप्त नेयम को सावन्यकार होती है। कोम को मीन पहुंबर टाला का नकता है। कोबी बर्गाल के बड़ि ही सह्याय रखा काय थीर द्रारा काय की हा नियों का सिर्गाय रखा काय। कीग को कारण एवं रूपम के घोरा मार्गार है।

क्रांच के शावेश के बर्गांत विवेद को टल है। योग क्राची-क्रोंचे एके काम कर रोला है कि क्रांच संकार प्रशांत्रश्चा



घ हरे। होने का हरिए होना धसभव है फिर भी राम (103)

हिं पकड़कर उसके पीछे माने भीर जिसका दुखदायी

धमाज के जितने नाते रिस्ते हैं व सब मोह की भावना है है बप हुए हैं। यह मेरा ह, वह मेरा ह की भावता

मा को ही प्रतीक है। सभी पायु वग क व्यक्ति मोह की मिरा में मुवासित होत रहने हैं। यह मोह चारे धीरे रेगा ही जाना है। एक रिचति तेसी झारी है कि जिस बस्तु मीर माह यह जाता ह जनस सपने की द्रर राजा ही े व नहीं हाना ह चीर उसके समाव से जीवन दुरानव ष्यति का माह के शक्य में विचार करना पारिय। माह की बासांस हुनर का कारता कनती है। देशम व्यक्ति धारो कान्यती का पालन गृही कह सहसा र बोर माविकारों से सक्त ही खाना है। सन कोर पर विजय एके के निम हर सन्य गएन करने करिया। सन्म रोह वें बच्चन ने मुख्य हैं दर हो स्थानक कारण का की बाह



(105)

एक बार जब विसी के मन में ईंप्यों की भावना पदा हो बातो हैती बहुतम ध्यक्ति के मन मे बननी पैना हिंगा रहती है। उस बेचनी ने सामों से स्वीक्त ईस्पा कि रोग्नेपूर होक्ट विसी भी प्रकार का कस कर सकता है। िया ? टरिस रेउव घरना तो पनन करना ही है बहु मारे मानह समाज के लिये समस्या जन जाता है। ध्यक्ति को ईट्या की आवना स दूर रहना चाहिए। विसी मधी वर्षों कियाँ वी जास[ा] हमें घरनी शक्ति घोट सबनाथ माध्य जीन में शौरत धनुप्रत ६००० वासि । प्यां रामान भगटो नी जह ९ इसे मात्र स प्राणनवा नाहरूर ह देना बाहिय ह यन को गढ़ बहुलियों में लटाता व हिये 5 हिंगम ईट्यू की भावना पास से भा नहीं पटकशा धीर वन्तिक का बाबन गुलसब हो बादल ।









^{इ.}मराय ही जीवना व्यक्ति की घ या बना देती है । उसके ^{हारे हात्र को सत्म} कर देवी है। जसका धय, साहस मादि ' ^{हर}ों को नाट कर हैती है। काम की चिक्त कास स भी म्हान होती है रावण बसे महान व्यक्तिस्व के धनी की भी

दि रापराय ने सीवाजी के सम्मुख कायर, कमजोर विवाद बर्बाद बर दिया । मिराग को जोतनेवाला व्यक्ति ही जोवन से मुखो ंनता है। उसक जावन में किसी तरह की बेरेनी या परे

भी नहीं रहती। नामों की तृष्ता साम क तुल्य है। विव नीवत मृत् वा वा नावी है हि तु रुचि नहीं घावी। रवा । ता प्राणी के सतपक्षु व द वर उस वियवपूर ेदगा है जिसस उस जान नहीं हो पाता कि कामराग रवादी मुली व साथ हु स भी रहा हुया है, धीर वह र भी भी उस पर साथमण कर जकता है।

कामराय को जीवन के लिख या व हरियो घीर साम वर दश्मित एवं वधार्मात्रने समय याति सावस्तव है। भ उसी दर्ज वा गवर्टा है, पिर अब दिवार परा १ ज ह विरुप्त पुरं करते का प्रसंत होता है पूरी ही जान तो राग दरणा है पुरति हो नावचा हु साध्येत स्थापन सम्मा ॥







